।। श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ।।



।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

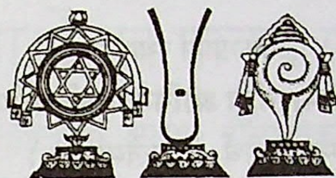
युगलरसमाधुरी

रचयिता

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीगोविन्ददेवाचार्यजी महाराज

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

युगलरसमाधुरी

रचयिता-

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीगोविन्ददेवाचार्यजी महाराज

प्रकाशक--

विद्वत्परिषद्

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

सलेमाबाद, पुष्करक्षेत्र, किशनगढ जि. अजमेर (राज०)

द्वितीय भाद्रशुक्ल ८ श्रीराधाष्टमी महोत्सव

वि० सं० २०६९, दिनाङ्क २३/९/२०१२ ई०

वि० सं० २०६९ श्रीनिम्बार्काब्द ५१०८

पुस्तक प्राप्ति स्थान--
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

द्वितीयावृत्ति--२०००
प्रथमावृत्ति : वि. सं. २०६६

मुद्रक--
श्रीनिम्बार्क - मुद्रणालय
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर
पाँच रुपये

परमाचार्यों का पावन स्वरूप

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीगोविन्ददेवाचार्यजी महाराज का वैदुष्य, कवित्व एवं अनपुम व्यक्तित्व आचार्यत्व परम आदर्शमय था। आपश्री ने "श्रीयुगलरसमाधुरी" ग्रन्थ के अतिरिक्त एक और विशाल ग्रन्थ का प्रणयन किया था किन्तु कालक्रमानुसार वह अभी तक अप्राप्य है। कतिपय पद जो वृन्दावन में रसिक सन्तवृन्द समाज गायन में संकलित उत्सव पदों का गायन करते हैं।

"श्रीयुगलरसमाधुरी" आपश्री की अनिर्वचनीय कृति है, इसमें विविध भावों का इतना मधुर सरस वर्णन किया गया है जिसे विद्वज्जन, सन्त-भक्तजन अनुशीलन कर परमानन्द का अनुभव करते हैं। अलङ्कार, अनुप्रास आदि साहित्यिक वर्णन अतीव विलक्षणता पूर्वक परम मननीय हैं। काव्य सौष्ठव अतीव अद्भुत एवं हृदयङ्गम करणीय है। श्रीयुगल प्रियालाल श्यामाश्याम निकुञ्जविहारी श्रीराधाकृष्ण भगवान् का निकुञ्ज रस परक जो वर्णन हुआ है वह निश्चय ही लोकोत्तर असमोर्ध्व है। सखि परिकर का, कुञ्ज-निकुञ्ज का लता-द्रुमावली एवं श्रीयमुनाजी का विविध विहग कुल का मधुकर निकर का इतना रोचक अनुशीलन पूर्ण

वर्णन है जिसके मनन करने पर हृदय में अपूर्व अनुराग आविर्भूत होता है जिससे निश्चय ही दिव्यानन्द की अनुभूति होती है।

परमाचार्यवर्य श्रीगोविन्ददेवाचार्यजी महाराज का पावनतम स्वरूप इतना विचित्रतम है जिनकी यह प्रस्तुत मधुरातिमधुर वाणी ''श्रीयुगलरसमाधुरी'' सर्वदा अवधारणीय है। इसका दीर्घकाल पूर्व प्रकाशन हुआ था, अब वे प्रतियाँ अनुपलब्ध है। अतः इसे पुनः प्रकाशित किया जा रहा है। जिसे रसिक महानुभाव अनुशीलन कर आनन्दरसानुभूति कर अपने को लाभान्वित करें।

--श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

मिति- द्वितीय भाद्रशुक्ल ८
श्रीराधाष्टमी महोत्सव
रविवार, वि० सं० २०६९
दिनांक २३/९/२०१२

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर-

श्रीगोविन्ददेवाचार्यजी महाराज

सर्वेश्वरार्चने लीनं भक्तिमार्गोपदेशकम् ।
श्रीगोविन्ददेवाचार्यं प्रणतोस्मि जगद्गुरुम् ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीगोविन्द-देवाचार्यजी महाराज का स्थिति काल विक्रम की १८ वीं शताब्दी माना जाता है।

वि० सं० १७९७ से १८१४ तक आपने आचार्य सिंहासन को अलंकृत किया। आपके समय में आचार्यपीठ की यथेष्ठ उन्नति हुई।

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी महाराज के धामवास हो जाने पर जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, कोटा, करोली आदि के नरेशों ने एकमत होकर श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ पर महाराष्ट्र देशीय शेषजयरामजी को अभिषिक्त करना चाहा। यह संघर्ष बहुत जोर-शोर से चला, किन्तु भक्त समुदाय और सम्प्रदाय के विरक्त सन्त, महान्तों ने राजाओं का विरोध किया। अन्त में राजाओं को अपना विचार बदलना पड़ा और विक्रम सं० १८०० में श्रीगोविन्ददेवाचार्यजी महाराज को आचार्यपीठ के सिंहासन पर अभिषिक्त किया। आप संस्कृत और हिन्दी के अच्छे विद्वान् और विशिष्ट कवि थे। पद रचना बड़ी ही सुललित है। इनका ही उपनाम ''रसिकगोविन्द'' था, प्रायः पदों में उक्त छाप ही लगाया करते थे। एक पद के अन्त में देखिये जिसमें कि भगवान् श्रीसर्वेश्वर

का नामोल्लेख भी है।

जयति वृषभानु-नन्दिनी जगवन्दिनी,
कृष्णहियचन्दिनी रंग-सेवी।
प्रणत गोविन्द नंद नंद सुख कन्द,
सर्वेश निजदास हरिप्रिया देवी।।

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठासीन होने के पष्चात् आप अनेक सन्तो की जमात एवं विद्वानों को लेकर विशेषतः भ्रमण किया करते थे। अधर्म का दमन एवं धर्म की स्थापना करते हुये जीवों को वैष्णव धर्म में दीक्षित कर हरि सम्मुख करना ही एकमात्र आपके भ्रमण का मुख्य उद्देश्य था। इन आचार्यचरणों को बड़े-बड़े राजा एवं बादशाह निमन्त्रण देकर अपने यहाँ बुलाने में अपना सौभाग्य समझते थे। एक समय धर्म प्रचारार्थ आप दिल्ली पधारे। आपमें कई एक ईश्वरीय गुण-विद्यमान थे। **आचार्य मां विजानीयात्** यह उद्धव के प्रति स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है। आपकी गुण गरिमा श्रवण कर नगरवासियों की भीड़ उपदेशामृत श्रवण एवं दर्शन के लिये आने लगी। इनके उपदेशामृत की प्रसंशा सर्वत्र होने लगी। रसिक महानुभावों में एक अपूर्व भावों की विशेषता होती। जिनकी भावपूर्ण भजन शैली एवं पराभक्ति के द्वारा जागतिक जीवों के लिए लौकिक एवं शारीरिक सम्बन्धी सभी आसक्तियों का सहज ही छुटकारा हो सकता है। जैसे श्रीभगवतरसिकजी ने कहा भी है--''पाँचे भूले देह सुधि छठे भावना रासकी, सातें पावै रीति रस श्रीस्वामीहरिदास की।''

रसिक रसिक-गोविंदजी नूरजहां दरसन दिये।

रहत प्रेम में मगन लगन लागी पिय-प्यारे ।।
कही अनेक धमार रेखता माँझ नियारे ।
भाव भावना कुशल कहीं दिल्ली पगधारे ।।
बेगम सुनि सुनि मिलन के हेत बिचारे ।
सखि रूप धरि महल मधि प्रेमभक्ति बरषन किये ।।

--गो० श्रीराधाचरण

आपकी प्रशंसा श्रवण कर नूरजहाँ नै भी दर्शन करने की इच्छा प्रकट की। बादशाह जहांगीर इन्हें सादर लेने के लिए पधारे बादशाह के आग्रह से आप महल में पधारे और अपने भक्तिरूप उपदेशामृत द्वारा सभी परिवार को कृतार्थ किया।

एक बार किशनगढ के नरेश श्रीसांवतसिंहजी (श्रीनागरीदासजी) और उनके छोटे भ्राता बहादुरसिंहजी में परस्पर अनबन रहती थी। कई राजा-महाराजाओं ने भी उन्हें अनेक बार समझाया, किन्तु कलह शान्त नहीं हुआ। विक्रम सं० १८१४ के आश्विन शुक्ल ९ शुक्रवार को रूपनगर से श्रीसाँवतसिंहजी और किशनगढ से श्रीबहादुरसिंहजी आपके कुशल समाचार पूछने आये। उस समय आप अस्वस्थ थे। दोनों भाई आचार्यचरणों के निकट बैठे थे। दोनों ही ने कुशल समाचार पूछे। इस पर महाराजश्री ने कहा-जब तक रूपनगर और कृष्णगढ राज्य का कलह शान्त न होगा हमारा स्वास्थ्य नहीं सुधर सकेगा। दोनों ही ने कहा क्या आज्ञा है। महाराज बोले रूपनगर की राज्य गद्दी पर सरदारसिंहजी को कृष्णगढ की गद्दी पर बहादुरसिंहजी को अभिषिक्त करके आप (साँवतसिंहजी) श्रीवृन्दावन वास करिये। दोनों ने आज्ञा मान कर

वैसी ही व्यवस्था की। सच है, महापुरुषों के वचनों में एक प्रबल शक्ति होती है। जिसके द्वारा बड़े से बड़े कार्य भी सहज ही में सुसम्पन्न हो जाते हैं। वे समदर्शी होते हैं उनमें सदा एकता की भावना बनी रहती है। वे द्वेष करने वालों में भी परस्पर प्रेम भावना उत्पन्न करा देते हैं। एक कवि ने कहा है कि--

कैंची आरा दुष्टजन जुरे देत विलगाय। सुइ सुहागा सन्त-जन
बिछुरे देत मिलाय॥

इनके द्वारा रचित "श्रीयुगल रस माधुरी" परमोत्कृष्ट ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ प्रकाशित भी हो चुका है। आचार्यों के मङ्गल बधाई एवं अन्य फुटकर पद भी बहुत हैं। श्रीवृन्दावन की समाज में जहाँ-तहाँ गाये जाते हैं। आपकी रचनाओं का एक बड़ा भारी संकलन "हरि गुरू सुयश भास्कर" के नाम से प्रख्यात है। सम्पूर्ण वाणी अनुपलब्ध है। इसकी हस्तलिखित एक प्रति भरतपुर राज्य के किसी काश्तकार के घर जैन मुनि श्रीकान्तिसागरजी को प्राप्त हुई थी जो अभी तक अप्रकाशित है। आपकी समाधि स्थल एवं चरण पादुकायें आचार्यपीठ में सुशोभित है और पाटोत्सव दिवस कार्तिक कृष्ण ५ (पञ्चमी) है।

श्रीराधासर्वेश्वर जु सहाय श्रीगोपीजन वल्लभो जयति।

श्रीयुगलरसमाधुरी

(रोला-छंद)

जय जय श्रीहरिव्यासदेव दिन-विदित विभाकर।
भ्रम, तम, श्रम, अघ, औघहरन सुखकरन सुघरवर।।१।।
कृपा-सिन्धु आनन्दकन्द दम्पति-रस-भीने।
मोसे मूढ अनेक पतित जिन पावन कीनें।।२।।
जासु कृपा सुप्रसाद जुगल-रस-जस कछु गाऊ।
सब रसिकनि को हाथ जोरि पुनि सीस नवाऊं।।३।।
श्रीवृन्दावन-सघन-सरस-सुख नित छवि छाजत।
नन्दनवन से कोटि-कोटि जिहि देखत लाजत।।४।।
जहँ खगमृग द्रुमलता बसत जे सब अबिरुद्धित।
काल, कर्म, गुन, काम, क्रोध, मद रहित सहित हित।।५।।
परम रम्य-घन चिदानन्द सर्वोपरि सोहैं।
तदपि जुगलरस-केलि काज जड़ ह्वै मन मोहैं।।६।।
तैसिय निर्मल-नीर निकट जमुना बहि आई।
मनहुँ नील-मणि-माल बिपिन पहिरें सुखदाई।।७।।
अरुन, नील, सित, पीत कमल-कुल फूले फूलनि।
जनु बन पहिरें रंग-रंग सुरंग दुकूलनि।।८।।
इन्दीवर कल्हार कोकनद पद्मनि ओभा।

मनु जमुना दृग करि अनेक निरखति बन-सोभा ।।९ ।।
तिन मधि झरत पराग प्रभा लखि दृष्टि न हारति ।
निज घरकी निधि रमा रीझि जनु बन पर बारति ।।१० ।।
सरस सुगंध पराग छके मधु मधुप गुंजारत ।
मनु सुषमा लखि रीझि परस्पर सुजस उचारत ।।११ ।।
पुलिन पवित्र विचित्र चित्रित जहँ अवनी ।
रचित कनक मनि खचित तदपि अति कोमल कमनी ।।१२ ।।
सुघट घाट बहु रंग छबीली छतरी सोहैं ।
कुसुम-भार झुकि लता परसि जल मन को मोहैं ।।१३ ।।
जल में झाँही झलमलाति प्रति बिम्बित सरसें ।
जल के भ्रमर तरंग रंग रंगिन के दरसें ।।१४ ।।
तट पै ताल तमाल साल गहवर तरु छाए ।
सभा-काज ऋतुराज बितान मनहुँ तनवाए ।।१५ ।।
कल्पवृक्ष संतान पारिजातक हरिचन्दन ।
देवदारु मंदार अगर अंबर मलयजघन ।।१६ ।।
तिन पर चढिकर लता उच्च अति फूल झरत खिलि ।
मनु विमान चढि देवबधू बरषावति कुसुमावलि ।।१७ ।।
तुलसी कूंद, कदंब, अंब, निंबू बहुरंगी ।
बट, असोक, अश्वत्थ, अगस्त, आमर्द पतंगी ।।१८ ।।
कोबिदार कचनार, बंस के बिरुआ चोखे ।
विजयासार, भृंगारहार, अरु चारु अनोखे ।।१९ ।।

अमलवेत, आरू, अँगूर, अञ्जीर, अमृतफल।
बरना, अरनी, कर्निकार, कलियार, वेत भल।।२०।।
सेमर, तिदुक, मधुक, विल्व, पापरी पलासा।
सरस, बहेरा कुरा, कैथ, कमरख, सविलासा।।२१।।
सीताफल अरु जम्बूफल बदरीफल, श्रीफल।
पिस्ते, पाडल, पनस, हरर, बड़हर, बदामफल।।२२।।
खारिक, खिरनि, खजूर, दाख, दाड़िमहि, बिजोरे।
नासपति, नारंगी, सेव, सहतूत, लिसोरे।।२३।।
जाइ, जायफल, बकुल, दलाइचि, लौंग, सुपारी।
कदली मिली कपूर गहरि जिहि लगि रहि भारी।।२४।।
केतकि अरु केवरा नागकेसरि, केसरि अति।
मेहँदी अरु माधवी मधुरि मल्ली अरु मालति।।२५।।
फूली चंपक फैलि रही जिहि सुगंध विसाला।
निज गुन मनहु प्रकाशि लसति नवजोबन-बाला।।२६।।
जुही, चमेली, फूलि, रहीं अस लगति सुहाई।
सरदजोन्ह जनु जुगल-दरस-हित विहंसति आई।।२७।।
नागबेलि बेला प्रवाल को है विस्तारा।
नरगस मुक्ता, मदनबान, मोगरा, निवारा।।२८।।
सुगंधार, सतवर्ग, जीवबंधुक अरु दौना।
गुलहबाँस बहु खिले मदन के मनहुं खिलौना।।२९।।
सुरजमुखी, गुलाब, गुलाला, नाफर मानो।

सोलजुही, सेवती, सरूं लै बिच-बिच ठानो ।।३० ।।
और लता बहु भाँति जाति कापै कहि आवति ।
एक-एकते अधिक जुगल हित छबिहि बढावति ।।३१ ।।
कोउ छोटी कोउ बड़ी कोऊ अधबिच की जानी ।
गुलमलता उलही अनेक अवनी लपटानी ।।३२ ।।
सुरतरु सम द्रुम-बेलि जाति सब सुख-कर श्रेनी ।
चिंतामनि मनि सकल बनी चिंतत-फल-देनी ।।३३ ।।
द्रुमबल्ली संकुलित सकल अस लगत सुभग तन ।
मनु जड़ ह्वै निज तियहि सहित सेवत सब सुरगन ।।३४ ।।
मौरमंजरी मूल-फूल फल-दल-मनि-मोती ।
ओत-पोत प्रतिबिंब परत अगनित छवि होती ।।३५ ।।
मुकुलित पल्लव फूल सुगंध परागहि झारत ।
जुग मुख निरखि विपिन जनु राई-लोन उतारत ।।३६ ।।
फूल फलन के भार डार झुकि यों छबि छाजैं ।
मनु पसारि दइ भुजा देन फल पथिकनि काजैं ।।३७ ।।
मधु मकरंद पराग लुब्ध अलि मुदित मत्त-मन ।
बिरद पढत ऋतुराज नृपति के मनु बंदीजन ।।३८ ।।
सुवा सारिका पढत कोकिला कूक मचावत ।
मनहुँ टेर दै पथिकजनन को निकट बुलावत ।।३९ ।।
चातक, मोर, चकोर, सोर चहुँओर निकाई ।
रतिपति-नृप के दूत देत जनु फिरत दुहाई ।।४० ।।

राजहंस कलहंस बंस यों सब्द सुनावत।
मनुहँ सप्तसुर मधुर-साज मिलि गंध्रव गावत।।४१।।
सुधा-सलिल-सर भरे विमल कमलनि जुत अलिगन।
निगुन-ब्रह्म जनु सगुन होइ सोहत मोहत मन।।४२।।
ठौर-ठौर जल-जन्त्र-जाल बँगला उसीर के।
हौद भरे केसरि गुलाब सौरभ भरी-भर के।।४३।।
कुंजगली कुसुमित रसाल बहु भाँति सुहाई।
फरस सुलपहै सरस-अतर बरसौं छिमकाई।।४४।।
सब ऋतु सन्त बसन्त लसत दूनी छवि दिन दिन।
सीतलमन्द सुगंध सहित्त मारुत बह सब छिन।।४५।।
महा छबिनु की भीर रहति नित-नव गुलजारी।
जनु रति पति नृप नित बिहार की निज फूलवारी।।४६।।
या बनकी बानिक समान मानहिं निकाई।
जाकी छवि की छटा छलकि सब बन छाई।।४७।।
मनमथ मदन मनोज मार मकरध्वज माली।
उज्ज्ञल रससों सींचि करत रचि पचि रखवाली।।४८।।
चित्रित चित्र बिचित्र महल झुकि रहे झरोखे।
छज्जे दरवज्जे कपाट फटकनि के गोखे।।४९।।
मनि मानिक जगमगत जोति जित-तित बिस्तारत।
बहुत दृगनि करि भवन जुगल-छवि मनहुँ निहारत।।५०।।
द्वारनि बन्दनवार बनी गजमुक्तनि भारी।

विहँसत है जनु सदन रदन दुति लगत उज्यारी ।।५१ ।।
ऊपरही रति-कलस धुजा फहरति पचरङ्गी ।
मनु कारीगर काम सदन सिर धरी कलङ्गी ।।५२ ।।
परसत रवि शसि रस मिस रस दुति जगमगात यों ।
बन घन में दामिनि स्वरूप इकरस राजत ज्यों ।।५३ ।।
घनसारनि के घनेसार घसि अँगन लिपाये ।
गावति मङ्गलाचार सखीगन बजत बधाये ।।५४ ।।
साएवान सु बितान तने बादलि झलाझल ।
जरकस परदा परे बिछे मृदु गिलम सु मखमल ।।५५ ।।
बहुत सुगन्धनि धूप दीप बहु रतन दिखावत ।
निसदिन होत प्रकाश तिमिर कहुँ रहत न पावत ।।५६ ।।
रङ्गमहल की छवि अनूप कछु कही न जाई ।
अखिलभुवन सिरमौर सहज जाकी ठकुराई ।।५७ ।।
मनि-मण्डल मुक्ता मयूख मधि रतन सिंघासन ।
सरस सुवासनि सहित कमलदल कोमल आसन ।।५८ ।।
तहँ राजत दोउ मीत प्रीति सों नित सुखदानी ।
रसिकराज महाराज राधिका श्रीमहारानी ।।५९ ।।
प्रीतम सुन्दरश्याम प्रिया छवि फवी गुराई ।
मनु सिंगार रस सङ्ग सिंगार किये सुन्दरताई ।।६० ।।
दोउ परस्पर प्रतिबिम्बित अद्भुत छबि छाजत ।
गौर श्याम मिलि हरित होत उपमा सब लाजत ।।६१ ।।

चटकीले पट नील पीत फहरत सुहाये।
रस बरसन को उनै मनुहुँ घन दामिनि आये।।६२।।
दोउ तन दर्पन अंग-अंग प्रतिबिम्बित सरसें।
दुगुन तिगुन चौगुन अनेक गुन भूषण दरसें।।६३।।
अंग संग बिहरतु कुंजबिहारिनि कुंजबिहारी।
दामिनि घन रति काम कनकमनि छबि पर वारी।।६४।।
जावक रंग सुरंग अरुण महमृदु तिय पदतल।
पिय हिय को अनुराग लग्यो जनु प्रणवत पल पल।।६५।।
अरुण-चरण-तलचिह्न चारु जगमगत बिराजें।
मो मनके अभिलाष लगे जनु पदरज काजें।।६६।।
चम्पकली अँगुली भली नखचन्द जुन्हाई।
सखिजन नैन-चकोर निरखि रहे इक टक लाई।।६७।।
अमल अमोल अनोट बीछिया शब्दित ऐसे।
कूजत कल कलहंस प्रभा के निधि में जैसे।।६८।।
कमल-चरन नूपुर जराइ के राजत गाजत।
मनहुँ सुरति संग्राम विजय के बाजे बाजत।।६९।।
गुलफ गुलाब प्रसून निरखि अलि पिय मति भूली।
अतरस अतरोटा अनूप नीवी मखतूली।।७०।।
अति सूक्ष्म कटि तट सुदेस मनि-किङ्किन-जाला।
मदन सदन के द्वार बँधी जनु बन्दनमाला।।७१।।
रस सर उदर तरंग उमगि त्रिवली छबि छाई।

नाभि-कमल अलि अवलि रोमावलि मनु चलि आई ।।७२ ।।
केसरि अँगिया कसें उरज उन्नत अरु गाढे ।
कनक कवच सजि सुभट जीति रति रन जनु ठाढे ।।७३ ।।
विमल सजल कल मुक्तमाल उर रुरति उदारा ।
मनु सुमेरु के शृंग जुगुल बिच सुरसरि धारा ।।७४ ।।
उरसि उरबसी मध्य अरुण नग यों छबि छाजत ।
तिय हिय को अनुराग बिदित जनु बाहरि राजत ।।७५ ।।
बलया बाजूबन्द भुजा पिय अंसनि दीनै ।
मनु घनश्याम स्वरूप दिव्य दामिनि कसि लीने ।।७६ ।।
कङ्कन पहुँची चुरी चारु जे भूषन करके ।
आल बाल किय मनहुं मैन माली सुरतरु के ।।७७ ।।
कमलपानि-दल अँगुरि बुन्द मेंहन्दी लपटानी ।
छला बजत सित मनहुँ हंस सुत कहत कहानी ।।७८ ।।
दुतिय हाथ लिये अमल कमल कल फूल फिरावत ।
ज्यों श्रीपति संग श्रीसुजान सुन्दर छबि पावत ।।७९ ।।
कण्ठ सरी दुलरी हीरनि धुकधुकी सुधारें ।
लटकत मुक्ता मनहुँ नचत नट मदन अखारें ।।८० ।।
पोति-पुंज मखतूल श्रवन भूषन जगमग छबि ।
मनु दुरि चल्यो पताल तिमिर दुहुं ओर उदित रबि ।।८१ ।।
धसति पान की पीक लसति गोरे गल ऐसी ।
ललित लालकी गुली बन्द भूषित नव जैसी ।।८२ ।।

कण्ठकम्बु सम मुख प्रसन्न श्रम-जलकन नीके।
मनहुँ चन्द के लगि सुछन्द रह बुन्द अमीके।।८३।।
नीलाम्बर मधि गौर बदन सोभित सबिलासा।
मनु पावस घन चीर सरद शशि कियो प्रकाशा।।८४।।
उज्ज्वल मुख के आस पास छबि फवी किनारी।
चन्द्रचारु जनु घेरि रही नव दामिनि प्यारी।।८५।।
ललित चिबुक बिच सुभग श्याम लीला शोभित अनु।
गिन्यो गुलाब सुमन स मझार मधु छक्यो मधुप मनु।।८६।।
अधर स धर मुख बास हास मृदु सिति दसनावलि।
अरुन कमल मधि बसत सहित जनु तड़ित बज्र मिलि।।८७।।
दीपसिखा सी नाक मुक्त पर मुख ढिंग डोलैं।
मनहुँ चन्द की गोद चन्द को कुंवर कलोलैं।।८८।।
हँसत कपोलनि गाढ परति पुनि इक तिल स्यामल।
मनहुँ सुधा-सर-मध्य खिल्यो इक नील कमल कल।।८९।।
मुकुर कपोलनि श्रुतिभूषन-प्रतिबिम्ब सुहाये।
अमल कमल वर बदन अलक अलि कौतुक आये।।९०।।
कर्न तरोनातरल झलमलत नीलाँचल में।
पन्यो प्रात प्रतिबिम्ब भानु जनु जमुना जल में।।९१।।
सजल पलक सित असित लाल दृग सरस सुअंजन।
बानि बैठ्यो रसराज नृपति जनु कमल सिंहासन।।९२।।
मदजोबन छकि रहे स आलस घूम घुमारे।

मदन-बान बहु कुटिल कटाच्छनि ऊपर वारे ।।६३।।
कोरे चपल बिशाल बहुरि भृकुटी अनियारी ।
मनहुं सकल जग जीति मदन धनु धरे उतारी ।।६४।।
केसरि खौरि सुभाल गुलाली बिन्दु बिराजत ।
कनक-लता फल लग्यो लालनग मनु छबि छाजत ।।६५।।
हीरनि बेनी सीसफूल बर अरुन रतन गनि ।
भाल भाग सिरपै सुहाग जनु बैठे बनि ठनि ।।६६।।
चिकुर चन्द्रिका चारु जगमगाति मुख मन मोहै ।
मदन विजय की धुजा मनहुँ छवि घर पर सोहै ।।६७।।
अग्रभाग पाटी असेत गुहि जुही चमेली ।
दुहुँदिसि उमड़ी घटा मनहुँ बक-पांति नवेली ।।६८।।
असित केस सित मुक्त माँग गुन अरुन गुही है ।
मनु सिंगार भुव सुजस प्रेम-रस-नदी बही है ।।६९।।
पीठि लुरित वैनी बिसाल पर वसन प्रभारम ।
कदली-दल पर अलि अवली पर श्यामघटा जिम ।।१००।।
सोंधे तें सतगुन सुबास सहजें अङ्ग अङ्गी ।
केसरि रङ्ग अँग रँग्यो कि अंग रंग केसरि रङ्गी ।।१०१।।
सारी कारी सरस देह-दुति अति नव-बाला ।
मनहुँ कुहू निसि मध्य दिपै दीपनि की माला ।।१०२।।
श्यामघटा मधि किधों दिव्य-दामिन-दुति सोहै ।
रसिकराय रिझवार चतुर चातक मन मोहै ।।१०३।।

नखसिख अतुलित छवि से कौन पै जाय उचारी।
जिहि लखि पिय बस भयो कियो सरबस बलिहारी।।१०४।।
पिय-पद पृष्ट जु श्याम अरुण तल नख सित श्रेनी।
मनु शोभा के सिंधु मध्य यह ललित त्रिवेनी।।१०५।।
अङ्कुस कुलिश कमल जवादि मुनिजन से न्हावैं।
नूपुर बाजत मनहुँ हंस कल शब्द सुनावैं।।१०६।।
गुल्फैं पिंडुरी सुलभ जुगल जङ्घन की शोभा।
मनु सिंगाररस मिले भले कदली के गोभा।।१०७।।
श्याम सच्चिकन देह चटक पीताम्बर पहिरें।
मरकतमनि पर पर्यौ प्रात आतप जन गहिरें।।१०८।।
कटि तट किङ्किनि बनी मनिनमय भूषित ऐसी।
तरु तमाल इक चमू लगी खद्योतनि कैसी।।१०९।।
सुन्दर उदर उदार ललित रोमावलि मनु अनु।
नाभि भ्रमर त्रिवली तरङ्ग शृङ्गार सरित जनु।।११०।।
रस-सर उर उरबसी लसी मनु मनमथ तरनी।
कौस्तुभमनि मनु खिली भली पद्मनि छवि करनी।।१११।।
मुक्तहार सरि कण्ठ धुकधुकी मुक्त कलौलैं।
हँस-पाँति ढिंग हँस सुवन जनु खेलत डोलैं।।११२।।
माल तुलसिदल बिबिध कुसुम मिलि सरस सँवारी।
आस पास छवि देत मनौ फूली फुलवारी।।११३।।
भाँई अवसि सुग्रीव रेख त्रिवली इमि जानौ।

कोमल श्यामल सङ्ग सरस अद्भुत इक मानौ ।।११४।।
चिंबुक चारु आनन प्रसन्न श्रम जल-कन जागे ।
मनहुं भोर मकरंद-बुन्द अरबिन्दहि लागे ।।११५।।
मधुर मनोहर हँसनि लसनि दुति सित दसनावलि ।
निकसि चन्द्र ते जोन्ह मनौ वरषति कुसुमावलि ।।११६।।
इक कर मुरली अधर मधुर प्रिय नाम उचरहीं ।
मनुहं मदनमोहनी-मन्त्र पढि जग बस करहीं ।।११७।।
दुतिय बाहु तिय अँस धरे बाजूबन्द साजै ।
छबि-मन्दिर पर धुज सिंगार रस कीधौं राजे ।।११८।।
कमल-पानि मनि जटित कनक पहुँची दुति भारी ।
निज चर के चहुं पास रमा जनु कृत रखवारी ।।११९।।
हाटक दोऊ सुखनि हरित नग लगे सुहाते ।
मनहुं कमल गल लागि पियत मधु मधुकर माते ।।१२०।।
करतल सुमन गुलाब चतुर अँगुरी अँगुष्टबर ।
मनहुं पञ्चसर नृपति सुभट के सुघट पञ्चसर ।।१२१।।
अँगुरी अरु अँगुष्ट मुद्रिकनि नग छबि छाजैं ।
नील-कमल के दलनि मनौ खद्योत विराजैं ।।१२२।।
अरुण अधरतर मुख सुबास नासिका सुहाई ।
मनहुं बिम्बफल मधुर जानि सुक तुण्ड झुकाई ।।१२३।।
मुक्ता सजल सुढार बिमल कल नासा दीनौ ।
मनहुं असुर गुरु सुघर उदय उच्चासन कीनौ ।।१२४।।

अधरन मुरली धरी रहीं अलकैं लपटाई।
नील कमल पर अलि अवलिन जनु कलह मचाई।।१२५।।
मकराकृत कुण्डल कर्ण लसत अति ललित कपोलनि।
मनु अगाध जल-बिमल-मध्य कृत मकर कलोलनि।।१२६।।
रुचिर पलक दृग कोर अरुण सित कारे तारे।
मनहुं कमल-दल नवल जुगुल अति मधु मतवारे।।१२७।।
कुटिल कटाछैं अति आछें भ्रुव बक्र बनी अनु।
मनमथ बरषत बान तानि मनु जुग मरकत धनु।।१२८।।
केसरि तिलक लिलार बिन्दु बन्दन छबि छाजत।
मनु सुर गुरु की गोद भूमि सुत बिदित बिराजत।।१२९।।
सीस मुकुट मधि सेत रत्न जगमगत नवीने।
घनतें मनहुं उदोत शरद शशि उड़गन लीने।।१३०।।
मुकुट सुघट बर बिमल मुक्त कल कलँगी थर हर।
मनहुं कलस धुज धरे मदन रस राज सदन पर।।१३१।।
बेनी बनी बिशाल पीठि पर लगति सुहाई।
तरु तमाल बक अलि अवली जनु रहि लपटाई।।१३२।।
श्याम अङ्ग अङ्गराग चन्दन घन सार गुराई।
जमुना जल पर जगमगाति जनु शरद जुन्हाई।।१३३।।
सहज सुवास शरीर सरस सोधेतें सुन्दर।
भ्रमर भ्रमत चहुंओर जानि जनु नील नलिनवर।।१३४।।
पिय घन श्याम सुजान प्रिया तन गोरी भोरी।

नव जोवन गुनरूप अनूपम अद्भुत जोरी ।।१३५ ।।
हाव भाव लावण्य सरस माधुरी मनोहर ।
अङ्ग अङ्ग छबि पर बारि दिये दिन कर रजनी कर ।।१३६ ।।
सङ्ग सखी सुखरासि ललित ललिता रङ्गदेवी ।
निरखति नित्य बिहार जुगुल रस सरस सुसेवी ।।१३७ ।।
अरु सखि सब सुखदेनि रुखहि लिय मुखहिं निहारैं ।
अपनी-अपनी उमग सहित सब सोंज सँवारैं ।।१३८ ।।
सर्वसु मन की लहैं रहैं रिझवति पिय प्यारी ।
ज्यों सेवति बिमलादि सखी सिय-अवधबिहारी ।।१३९ ।।
कोउ कर लीने विमल छत्र जिहिं जगति जुन्हाई ।
मनु घन-दामिनि सीस शरद शशि छबि रहि छाई ।।१४० ।।
गज मुक्ता की लूम सुघट सज्ञल उजलाई ।
मनु लटकत यह चिद्विलास सुन्दर सुखदाई ।।१४१ ।।
नीलबरन दुंहुँ ओर मोरछल लगत सुहाये ।
नीलकण्ठ जनु नवघन तड़ित दरस हित आये ।।१४२ ।।
दुँहुँ दिशि चामर चलत सेत शोभित अरु गहरे ।
मनहुँ मराल रसाल प्रभानिधि के तट विहरे ।।१४३ ।।
लिये अड़ानी दुहूँ ओर सखि छबिहि बढावति ।
मनु द्वै ठाढी तड़ित दुंहुंनि आरसी दिखावति ।।१४४ ।।
कोउ दर्पन कोउ ब्यजन सुमन-भूषन कोउ लीने ।
कोउ जराय भूषन सपुंट लिये जटित नगीने ।।१४५ ।।

कोउ लीने मुक्तनि मण्डन महामनोहर ।
कोउ लिये घनसार चार के अलङ्कारवर ।।१४६ ।।
कोउ मृगमद चन्दन कपूर केसरि लीने घसि ।
कोउ चोआदि गुलाब लिये सीसी भरि रही लसि ।।१४७ ।।
अतरदान कोउ पानदान कोउ लै पिकदानी ।
सुरङ्ग बसन चुनि चारु लिये कोउ सखी सयानी ।।१४८ ।।
कोउ नवनीत सितादि मधुर-मेवा लिये थारी ।
कोउ भरि लिये सुगन्ध सीत जमुना-जल-झारी ।।१४९ ।।
कोउ रुमाल कर-कमल बदन पर भ्रमर उड़ावत ।
कोउ दुहुँ कर बलिहारि लेति लखि कोउ सिर नावति ।।१५० ।।
कोउ कर लै सखि सुवा सारिका सुघर पढावति ।
फूलछरी लै खरी कोऊ इतमाम जनावति ।।१५१ ।।
कोउ मृदङ्ग कोउ बीन मुरज कोउ मधुर बजावति ।
कोउ तमूर सारङ्ग सितार करतार सुनावति ।।१५२ ।।
कोउ रवाव कोउ चङ्ग उपङ्ग सुरंग मिलावति ।
कोउ लिये ताल विधान बजति सैननि समुझावति ।।१५३ ।।
कोउ अलापि स्वरसप्त पञ्च मधुरे मिलि गावति ।
कोउ ऊँचे सुरतान तरङ्गनि रङ्ग वढावति ।।१५४ ।।
कोउ नूपुर सजि सुढङ्ग नचति कोउ सुघर नचावति ।
बटा उछारत कोउ चकई कोउ लटू फिरावति ।।१५५ ।।
कोउ सखि छन्द प्रबन्ध काव्य उघटति सरसाई ।

सुधमुद्रा लै सुरति ग्राम मूर्छना मिलाई ।।१५६ ।।
आरोही अवरोही अरु थाई संचारी ।
दुरनि मुरनि मुरकनि चितवनि हस्तनि छबि न्यारी ।।१५७ ।।
को-कला सङ्गीत राग रागिनि गति जेती ।
अभिनव मूरतिवन्त सुघर सखि दिखवत तेती ।।१५८ ।।
हाव भाव आलम्ब उदीपन सरस निकाई ।
सेवति धरि-धरि रूप जाति जेतिक मधुराई ।।१५९ ।।
नृत्य गीत वाजन्त्र सकल मिलि यों धुनि साजैं ।
महामोहनी मदनमन्त्र मनु अद्भुत बाजैं ।।१६० ।।
रीझि खवासिन अपन बसन भूषन दोउ देहीं ।
सखि सभाग अति उमगि सीस सादर धरि लेहीं ।।१६१ ।।
ज्यों चिन्तामनि सुरतरु देत मनोरथ सरसैं ।
त्यों जुग कमल-पराग सुगंध अलिकुल हित बरसैं ।।१६२ ।।
कोउ सखि छबि लखि रीझि रही टकटकी न टारैं ।
कोउ सिर चालन करति रीझि कोउ सर्वस वारैं ।।१६३ ।।
राई लोन उतारि कोऊ छबि पर तृन तोरति ।
कोउ काहू कछु बात कहति कोउ हँसि मुख मोरति ।।१६४ ।।
ऐसे चरनि अनेक एक मुख कहे न जाई ।
ज्यों तारागन चन्द्र भानु नहिं मुठी समाई ।।१६५ ।।
श्यामा श्याम सुजान सखिन की सभा सुहाई ।
मनु छबि रीझि रसाल माल बन को पहिराई ।।१६६ ।।

सखिन मध्य नित प्रिया सङ्ग पिय शोभित ऐसे।
सब सक्तिन मधि श्री समेत पुरुषोत्तम जैसे।।१६७।।
जिन पद-नख-छबि-छटा कोटि शशि सूरज सोहै।
तिन समान उपमान आन या जग में कोहै।।१६८।।
जेतिक उपमा कही सही परि सम नहिं लेखै।
ज्यों झीने पट मधि अमोल नग सुघर परेखैं।।१६९।।
अखिल विश्वव्यापीक ब्रह्म जिनकी उजियारी।
सो वृन्दावनचन्द्र सदा श्रीकुंजबिहारी।।१७०।।
जहँ नित-नव खग मृग लतादि सखि सकल रसिकजन।
ह्वै ह्वै रूप अनूप दुहुनि सेवत अति दृढ-मन।।१७१।।
महा मनोहर मही मुकुर-मनि-मय सब ठाँहीं।
प्रतिबिम्बित सब शोभ दुतिय बन जनु भुव माहीं।।१७२।।
नित अनुराग सुहाग भाग आनन्दमई है।
नित रसरीति प्रतीत प्रीति नित नई नई है।।१७३।।
नित सुखसार बिहार सखी नित दरसन पावैं।
बिन सखियन की कृपा आन कोउ जान न पावै।।१७४।।
जहाँ जिती जे वस्तु अलौकिक नित-नव सोहैं।
सब सोभा कहि सकैं सुकवि या जग में कोहैं।।१७५।।
मन भर चाँवर चारु सुघर घट इक मधि सीझत।
इक कन लै दृढ तोरि ताहि सम सब लखि लीजत।।१७६।।
तैसेहि यह रस कथा यथामति कछु इक गाई।

इक मच्छर ज्यों सब आकाश की थाह न पाई ।।१७७।।
ऊख पयूष मधु आदि जग जिती मिठाई ।
ते सब नीरस यहै मधुररस सरस निकाई ।।१७८।।
स्वर्ग सुधा-रस पिये छीन तप भुव पर परई ।
प्रेम सुधारस पिये जुगल नित दरसन करई ।।१७९।।
प्रेम सुधानिधि महामधुर कोउ पार न पाहै ।
अलप मीन मन मोर ताहि किहि बिधि अवगाहै ।।१८०।।
जलधर-धार अनेक एक चातक किमि पीवै ।
कछु जल-कन मुख परे सु लै सुख पावै जीवै ।।१८१।।
चन्द्र चारु बहु इक चकोर छबि किहि बिधि गावत ।
निरखि हरखि हिय थकित रहत कछु कहत न आवत ।।१८२।।
रसना के दृग नहीं दृगनि के रसना नाहीं ।
कहै सु लखि नहिं सकै लखे जेहि कहे न जाहीं ।।१८३।।
तौ कहिये केहि भाँति प्रभा सब सुख के साधा ।
मीठो दै कछु कही रसिक छमियो अपराधा ।।१८४।।
यहै परम माधुर्य ध्यान सर्वोपरि जानौ ।
गोप्य गोप्य अति गोप्य भूलि जनि प्रगट बखानौ ।।१८५।।
यहै निरन्तर ध्यान धरत कैलाश-निवासी ।
इहि बनसखि ह्वे दीप दिखावत करत खवासी ।।१८६।।
यहै ध्यान ब्रह्मादि धरैं सादर सिर नावै ।
इन्द्रादिक हैं तुच्छ आन की कवन चलावै ।।१८७।।

शुक, सनकादिक, नारदादि व्यासादिक गावैं।
शारद, शेष, गनेश, आदि कोउ पार न पावैं।।१८८।।
आगम निगम पुरान आदि नित नेति बखानै।
ता महिमा कौ अलप बुद्धि इक जन क्यों जानै।।१८९।।
श्रीगुरु श्रीहरिव्यासदेव के शरणै आयो।
तिनकी कृपा सुदृष्टि यथामति रस जस गायो।।१९०।।
महापतित महाकृपन कुटिल सठ क्रोधी कामी।
सो लीनो अपनाइ कृपानिधि श्रीगुरुस्वामी।।१९१।।
जैसे पारस परसि लोह कंचन तन धरई।
ज्यों चन्दन की पवन नीब पुनि चन्दन करई।।१९२।।
श्रीगुरु की महिमा अनन्त कछु कही न जाई।
जिन घर सिर धरि वासुदेव लकरी पहुँचाई।।१९३।।
सव-देवन के देव सदा गुरुदेव कहावैं।
इन्हें छाँड़ि के महामूढ जो औरै ध्यावैं।।१९४।।
निज-सुख-हित 'रस-जुगुल-माधुरी' चरित बनायौ।
रसिकन हितसों दियौ बिमुखन महा दुरायौ।।१९५।।
जे नर रसिक चकोर-मीन-चातक व्रत-धारी।
ते भल इहि मग चलैं आन कोउ नहिं अधिकारी।।१९६।।
जिनके यह रससार आनरस सुन्यौ न भावै।
ते नित ये सुख लहैं आन सपने नहिं पावै।।१९७।।
यहै अगम आधार सुगम साधन किमि होई।

श्रीगुरु श्रीहरिव्यास-कृपा बिनु लहै न कोई ।।१९६ ।।
'रसिकगुबिन्द' सखि चरन सरन दिन दरसन पावै ।
जय जय श्रीगुरुदेव यहै सुख दृगन दिखावै ।।१९९ ।।

दोहा-

यह अगाध निधि मधुर रस, छवि कछु कही न जाइ ।
चटक चहै सबही पियो, पै इक बुन्द समाई ।।१ ।।
यहै जुगुल-रस-माधुरी, सादर लहै जु कोइ ।
प्रेमभक्ति सब सुख सदा, 'श्रीगोविन्द' तेहि होई ।।२ ।।

मंगल बधाई पद

आज महामंगल भयो माई ।
प्रगटे श्रीपरशुराम सह, सुंदर सन्तन के सुखदाई ।।
नव निकुंज श्रीप्रेममंजरी, दम्पति अति मन भाई ।
श्रीगोविन्ददेव मम स्वामिनी, रस वरषा वरषाई ।।१ ।।
रंगीली वधाई आज बाजे ।।
गुनि गंधर्व सर्व जुरि आये, श्रीहरिव्यास दरवाजे ।।
देत दान मन वांछित सवनिकूं, सुयश वितान पुर छाजै ।
प्रगटे श्रीपरशुरामदेव महल ते, रसिकगोविन्द सिरताजे ।।३ ।।
आज वधाई को दिन नीको ।
प्रगटे परशुदेव सव सुखनिधि, रसिक मुकटमणि टीको ।।
शुभ नक्षत्र शुभघरी महूरत, भाद्रपकृष्ण पंचमी पीको ।
देत असीस सदा चिरजीवो, रसिकगोविंद भयो ही को ।।४ ।।

*

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीगोविन्ददेवाचार्यजी महाराज का

अनुपम स्वरूप

(१)

श्रीनिम्बारक पीठ के, परमाचार्य महान।
गोविंददेवाचार्यवर, शोभित परम अमान।।

(२)

इनके अनुपम चरित हैं, सुयश परम अपार।
श्रीसर्वेश्वर ध्यान में, मंजुल मन अवधार।।

(३)

कविवर परम सुधीश हैं, करते भगति प्रचार।
हरि सेवारत आप हैं, सकल शास्त्र का सार।।

(४)

गोपाल मन्त्रराज का, जाप करत अवधान।
श्रीयमुना जल पान नित, करत कुंज रस पान।।

(५)

जिन पावन उपदेश को, श्रवण करत धर ध्यान।
प्रतिदिन भावुक भक्तजन, सुभग संत गुणवान।।

(६)

समागत संत-महन्तजन, आवत जावत रोज।
श्रीचरण आदेश लभत, करत प्रीति से भोज।।

(७)

श्रीनिम्बार्कतीर्थ जल, करत आचमन आप।
जिनके दर्शन मात्र से, नशत सकल परिताप।।

(८)

रची युगलरसमाधुरी, वह है रस की खान।
अनुशीलन जिसका करत, पावन अनुपम ज्ञान।।

(९)

यज्ञादि सत्कर्म निरत, सुधी--विप्र को दान।
ऐसे परमाचार्यवर, शरण गहो तज मान।।

(१०)

श्रीहरिकीर्तन करत नित, श्रीसर्वेश्वर धाम।
श्रीनिम्बारकतीर्थ में, स्नान करत अविराम।।

(११)

भगवद्-गीता मनन रत, करत भागवत पाठ।
श्रीसर्वेश्वर-अर्चना, अभिरत सदा हि ठाठ।।

(१२)

सतत निरत परोपकार, पावन दिव्य विचार।
शरणागत रक्षक सदा, मञ्जुल रूप निहार।।

(१३)

राधाकृष्ण उपासना, करत सदा हिय धार।
स्वाभाविक द्वैताद्वैत, रत सिद्धान्त प्रचार।।

(१४)

भगवल्लीलारासरस, आनन्द लेत अपार।
रचना अभिरत सतत ही, जपत मन्त्र निशिवार।।

(१५)

श्रीवृन्दावन धाम का, करहि सश्रद्ध निवास।
निर्मल यमुना धार में, नान्ह लहत प्रतिमास।।

(१६)

शालग्राम सर्वेश्वर, शोभित कण्ठ प्रदेश।
सम्प्रदाय सेवा निरत, प्रतिभा मञ्जु अशेष।।

(१७)

पल-पल रटते राधिका,-कृष्णविहारीश्याम।
व्रज-गोवर्धन निकटतम, निम्बग्राम विराम।।

(१८)

श्रीवृन्दावन धाम में, विहार घाट सुकुञ्ज ।
पुनि-पुनि निवसत है जहँ, शोभित महन्त पुञ्ज ।।

(१९)

गोमाता सेवा निरत, शोभित सन्त समाज ।
जिनका सुयश असीम है, प्रणमत अगणित राज ।।

(२०)

गोविन्ददेवाचार्य वर, पीठाचार्य महान ।
राधासर्वेश्वरशरण, प्रणति करहि सम्मान ।।

